भक्ति काव्य

मीराबाई

कवि परिचय :

मीरा बाई का जन्म सन् 1503 ई. (संवत् 1560) में मेड़तिया के राठौर रत्नसिंह के यहाँ हुआ माना जाता है। उदयपुर के महाराज भोजराज से उनका विवाह हुआ था। इनकी अनन्य कृष्णभक्ति और संत समागम से राणा परिवार रुष्ट हो गया था। कहते हैं कि एक बार मीरा को विष भी दिया गया किन्तु उन पर उसका असर नहीं हुआ।

मीराबाई के नाम से जिन कृतियों का उल्लेख मिलता है उनके नाम हैं - `नरसी जी रो माहेरो', `गीत गोविन्द की टीका', `राग गोविन्द', `सोरठ के पद', `मीराबाई का मलार', `गर्वागीत', `राग विहाग' और फुटकर पद। भौतिक जीवन से निराश मीरा की एकान्त निष्ठा, `गिरधर-गोपाल' में केन्द्रित है। `मेरे तो गिरिधर-गोपाल दूसरो न कोई' कहकर मीरा ने कृष्ण के प्रति अपने समर्पण भाव को व्यक्त किया है। भक्ति का यह भी एक लक्षण है।

मीरा के पदों के वाचन और गायन से संकेत मिलता है कि मीरा की भक्ति भावना अन्तः करण से स्फूर्त है। उन्होंने मुक्त भाव से सभी भक्ति सम्प्रदायों से प्रभाव ग्रहण किया है। उनकी रचनाओं में माधुर्य समन्वित दाम्पत्य भाव है। मीरा का विरह पक्ष साहित्य की दृष्टि से मार्मिक है। उनके आराध्य तो सगुण साकार श्रीकृष्ण हैं। उनके अधिकांश पद राजस्थानी भाषा में लिखे गए हैं, साथ ही ब्रजभाषा, गुजराती और खड़ी बोली से प्रभावित हैं। उन्होंने प्रायः मात्रिक छन्दों का ही प्रयोग किया है। उनकी भक्ति में दैन्य तथा माधुर्य भाव की प्रधानता है। मीरा के पद गेय हैं। इनमें विभिन्न अलंकारों की छटा देखी जा सकती है।

भक्ति काल के स्वर्ण युग में मीरा के भक्ति भाव से सम्पन्न पद आज भी अलग ही जगमगाते दिखाई देते हैं।

केशवदास

कवि परिचय :

केशवदास के जन्मकाल के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इनका जन्मकाल सन् 1555 ई. (संवत् 1612) तथा मृत्यु सन् 1617 ई. (संवत 1674) माना गया है। इनका जन्म स्थान ओरछा मध्यप्रदेश है।

`रसिकप्रिया', `कविप्रिया', `रामचन्द्रिका', `वीरचरित्र', `विज्ञान गीता' और `जहाँगीर जस चन्द्रिका' इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। संस्कृत के `प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक के आधार पर `विज्ञान गीता' निर्मित हुई है। `जहाँगीर जसचन्द्रिका' में जहाँगीर के दरबार का वर्णन है।

नीति-निपुण, निर्भीक एवं स्पष्टवादी केशव की प्रतिभा बहुमुखी है। उनकी रचनाओं में उनके आचार्य, महाकवि और इतिहासकार का रूप दिखाई देता है। आचार्य का आसन ग्रहण करने पर इन्हें संस्कृत की शास्त्रीय पद्धति को हिन्दी में प्रचलित करने की चिन्ता हुई जो जीवन के अन्त तक बनी रही। इनके पहले भी रीतिग्रंथ लिखे गए किन्तु व्यवस्थित और सर्वांगीण ग्रंथ सबसे पहले इन्होंने ही प्रस्तुत किए। अनुप्रास, यमक और श्लेष अलंकारों के ये विशेष प्रेमी हैं। इनके श्लेष संस्कृत पदावली के हैं। अलंकार संबंधी इनकी कल्पना अद्भुत है।

इनका कवि रूप इनकी प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। संवादों के उपयुक्त विधान का इनमें विशिष्ट गुण है। मानवीय मनोभावों की इन्होंने सुन्दर व्यंजना की है। संवादों में इनकी उक्तियाँ विशेष मार्मिक हैं तथापि प्रबन्ध के बीच अनावश्यक उपदेशात्मक प्रसंगों का नियोजन उसके वैशिष्ट्य में व्यवधान उपस्थित करता है। इनके प्रशस्ति काव्यों में इतिहास की सामग्री प्रचुर है। मध्यकाल में किसी के पाण्डित्य अथवा विद्वता की परख की कसौटी थी- केशव की कविता। केशव यदि `रसिकप्रिया' जैसी भाषा लिखते रहते तो ये `कठिन काव्य के प्रेत' कहलाने से बच जाते। कल्पना शक्ति संपन्न और काव्यभाषा में प्रवीण होने पर भी केशव पाण्डित्य प्रदर्शन का लोभ संवरण नहीं कर सके।

केन्द्रीय भाव -

आराध्य और आराधक के बीच संबंध की भावना को ही भक्ति के रूप में निरूपित किया गया है। इसमें आराध्य के प्रति आराधक की सेवा-भावना की प्रमुखता है। भक्ति के क्षेत्र में ईश्वर की महिमा का श्रवण, गायन और विविध प्रकार से उनकी सेवा करने का विधान है। इस विधान को नवधा भक्ति के नाम से जाना जाता है। भक्ति की सीमा में आराध्य और आराधक के बीच जो संबंध-भावना है; उसे दास्य, सख्य, आदि रूपों में भी व्यक्त किया गया है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर से सेवक-भाव, सखा-भाव आदि के रूप में भी संबंध स्थापित किया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य में पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल की संज्ञा प्रदान की गई है। इस युग में भक्ति का आधार ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूप मिलते हैं; इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेम, सेवा तथा ज्ञान के मार्ग निर्धारित किए गए हैं। निर्गुण को आराध्य मानने वाले अधिकांश संत और भक्त कवियों ने उसे ज्ञान और प्रेम के माध्यम से अनुभव करने का संकेत दिया है। परन्तु 'सगुण-ब्रह्म' के रूप में राम और कृष्ण को केन्द्र बनाकर कविताओं का जो सृजन हुआ वह विशुद्ध प्रेम पर आश्रित है। भक्ति-काल में भक्ति का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति के साथ-साथ समाज-कल्याण की भावना की परिपुष्टि भी रही है। 'सामाजिक-समरसता' की भूमिका निर्मित भी भक्तिकाल में ही हुई। जीवन में सदाचार उच्च मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

भक्तिकाल की प्रमुख कवयित्री 'मीरा' ने श्रीकृष्ण को पति रूप में स्वीकार कर 'प्रेमभाव से समन्वित भक्ति' को ही अपनी साधना का आधार बनाया। 'प्रेम-भक्ति' का मूल आधार 'रति' है। रति की परिणति 'दाम्पत्य-भाव' में भी होती है। इस दाम्पत्य भाव के अन्तर्गत माधुर्य-उपासना की पीठिका निर्मित होती है। मीरा ने कृष्ण के प्रेम में डूबकर राजरानी पद का परित्याग कर दिया; वे साधु-संतों की संगत में रहकर बावली होकर कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पित हो गईं। संकलित पदों में मीरा का दृढ़-संकल्प, उनकी सत्संग की प्रबल-चाह, उनकी भक्ति-यात्रा में प्रस्तुत होने वाले विघ्न, उन पर सद्गुरु की असीम कृपा तथा कृष्ण-कृपा की एकनिष्ठ आकांक्षा का उल्लेख है।

भक्ति केवल भक्ति काल तक सीमित भाव नहीं है, यह काव्य के लिए एक शाश्वत-भाव भी है। इसलिए अन्य काल के कवियों में भी भक्ति-तत्व के दर्शन होते हैं जैसे-'केशवदास' - वे रीतिकाल के कवि माने जाते हैं; किन्तु उनकी कविता में भी भक्ति-भावना का निदर्शन है। प्रस्तुत काव्यांश में केशवदास द्वारा की गई देव-वन्दना परक पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं। 'भक्ति' के अन्तर्गत 'इष्ट' के वन्दन-अर्चन की प्रक्रिया है। वे गणेश, सरस्वती और श्रीराम की वन्दना करते हुए इनकी महिमा का वर्णन करते हैं। वे गणेश की कष्टनिवारक क्षमता, सरस्वती की उदारता और श्रीराम की मुक्ति-प्रदायिनी क्षमता का विशेष रूप से उल्लेख करते हैं।

केशवदास के छंदों में जहाँ भाषिक-स्तर पर शब्दालंकारों का सौन्दर्य बिखर रहा है; वहीं मीरा के पदों में सहज संवेदनशीलता का भाव लोक-जीवन के प्रतीकों में प्रकट होता है।

मीरा के पद

बाल्हा मैं बैरागिण हूँगी हो।
जो-जो भेष म्हाँरो साहिब रीझै, सोइ सोइ भेष धरूँगी, हो।
सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी, हो।

जाको नाम निरजण कहिये, ताको ध्यान धरूँगी, हो।
गुरू, ज्ञान रंगू, तन कपड़ा, मन मुद्रा पेरूँगी, हो।
प्रेम प्रीत सूँ हरि गुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी, हो।
यातन की मैं करूँ कीगरी; रसना राम रटूँगी, हो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, साधाँ संग रहूँगी, हो।।1।।

गली तो चारों बन्द हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाइ।
ऊँ ची नीची राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराइ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार-बार डिग जाइ।
ऊँ चा नीचा महल पिया का, हमसे चढ्या न जाइ।
पिया दूर पथ म्हाँरो झीणों, सूरत झकोला खाइ।
कोस-कोस पर पहरा बैठ्या, पैड़-पैड़ बटमार।
हे विधना कैसी रच दीन्हीं, दूर बस्यौ म्हाँरो गाँव।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुरु दई बताय।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरा, घर में लीन्ही लाय।।2।।

सखी री लाज बैरन भई।
श्री लाल गोपाल के संग, काहे नाहिं गई।।
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई।
रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मीजत रही।।
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह में तन तई।
दासी मीरा लाल गिरधर, बिखर क्यों न गई।।3।।

भज मन चरण कँवल अविनासी।
जेताई दीसे धरण गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हें, कहा लिए करवत कासी।
इस देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्यो उठ जासी।
कहा भयो है भगवा पहरयाँ, घर तज भये संन्यासी।।
जोगी होय जुगत नहि जाणी, उलटि जनम फिर आसी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जनम की फाँसी।।4।।

– मीराबाई

वंदना

गणेश-वंदना

बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल,
कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुख को।
बिपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम,
पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुष को।
दूरि कै कलंक-अक भव-सीस-ससि सम,
राखत है केशोदास दास के बपुष को।
साँकरे की साँकरनि सनमुख होत तोरै,
दसमुख मुख जोवैं गजमुख-मुख को।।1।।

सरस्वती-वंदना

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ,
ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तपबृद्ध,
कहि-कहि हारे सब कहि न काहू लई।
भावी भूत बर्तमान जगत बखानत है,
केशोदास क्योंहू ना बखानी काहू पै गई।
पति बर्नै चारमुख पूत बर्नै पाँचमुख,
नाती बर्नै षटमुख तदपि नई नई।।2।।

श्रीराम-वंदना

पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण,
बतावैं न बतावैं और उक्ति को।
दरसन देत जिन्हैं दरसन समुझैं न,
नेति नेति कहैं बेद छाँड़ि भेद जुक्ति को।
जानि यह केशोदास अनुदिन राम राम,
रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अणिमाहि, गुन देई गरिमाहि,
भक्ति देई महिमाहि, नाम देई मुक्ति को।।3।।

– केशवदास

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मीरा की भक्ति किस भाव की थी?
2. मीराबाई कैसा वेश रखना चाहती हैं?
3. ''राम-चंद्रिका'' के रचयिता कौन हैं?
4. गजमुख का मुख कौन देखता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मीरा के अनुसार देह का गर्व क्यों नहीं करना चाहिए?
2. मीरा को हरि से मिलने में क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं?
3. भगवान गणेश भक्तों की विपत्तियों को किस प्रकार हर लेते हैं?
4. माँ सरस्वती की वंदना कौन-कौन करता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ''मीरा का सम्पूर्ण काव्य भाव-विह्वलता के गुणों से पूरित है।'' सिद्ध कीजिए।
2. मीरा अपने मन को ईश्वर के चरण कमलों में ही क्यों लीन रखना चाहती हैं?
3. 'कठिन क्रूर अक्रूर आयो' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. 'बानी जगरानी की उदारता' का बखान करना क्यों संभव नहीं है?
5. श्रीराम वंदना में राम के नाम की क्या महिमा बताई गई है?
6. केशवदास की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   (अ) बाल्हा मैं बैरागिण.....साधाँ संग रहूँगी हो।।

   (ब) भजमन चरण.....जनम की फाँसी।।

   (स) बालक मृणालनि.....गजमुख-मुख को।।

   (द) भावी भूत वर्तमान..... नई-नई।।

काव्य सौन्दर्य -

1. **निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए-**

   सील, पग, जतन, जुग, पात, सीस, ससि, दरसन, पूत, गुन

2. **'म्हारों', 'सूँ' आदि राजस्थानी शब्दों का प्रयोग मीरा के पदों में हुआ है। ऐसे ही अन्य शब्दों का चयन कर उनका अर्थ लिखिए।**
3. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-**

   रसना, पथ, गगन, देह, जगत, मुख, भव

4. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए-

(क) 'सोच सोच पग धरुँ जतन से, बार-बार डिग जाइ।'

(ख) 'भज मन चरण कँवल अविनासी।'

(ग) 'बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल'

(घ) 'बिपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम।'

(ङ) 'पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण।'

(च) 'दरसन देत जिन्हे दरसन समुझै न।'

ध्यान दीजिए -

भज मन चरण कँवल अविनासी।
जेताई दीसे धरण गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।

उपर्युक्त उदाहरण को ध्यान से पढ़िए। इन पंक्तियों को पढ़कर मन में भक्ति भाव जाग्रत होते हैं एवं अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। ये मन के भाव ही रस कहलाते हैं। ''वाक्यं रसात्मकं काव्यं'' रस से युक्त वाक्य ही काव्य हैं। रस को काव्य की आत्मा कहा जाता है।

5. रस की परिभाषा दीजिए।

समझिए-

काव्य शास्त्रियों के अनुसार रस के चार अंग होते हैं। ''विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रस निष्पत्ति:'' अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।

रस के चार अवयव हैं-

1. **स्थायी भाव-** सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से निवास करते हैं, स्थायी भाव कहलाते हैं। इन्हें अनुकूल या प्रतिकूल किसी प्रकार के भाव दबा नहीं पाते। स्थायी भाव नौ हैं। इन्हीं के आधार पर नौ रस माने गए हैं। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव नियत होता है। रति, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, जुगुप्सा (घृणा), विस्मय, शम (निर्वेद) स्थायी भाव हैं। इसके अतिरिक्त वात्सल रस माना गया हैं। इसका स्थायी भाव वत्सल है।
2. **संचारी भाव-** स्थायी भाव को पुष्ट करने के लिए जो भाव उत्पन्न होकर पुन: लुप्त हो जाते हैं उन्हें संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गई है। निर्वेद, शंका, ग्लानि, हर्ष, आवेग आदि प्रमुख संचारी भाव हैं।
3. **विभाव -** स्थायी भावों को जाग्रत करने वाले कारक विभाव कहलाते हैं। इनके दो भेद हैं- आलम्बन और उद्दीपन।

   आलम्बन- जिसके प्रति स्थायी भाव उत्पन्न हो, वह आलम्बन कहलाता है।

   स्थायी भावों को बढ़ाने या उद्दीप्त करने वाले भाव उद्दीपन कहलाते हैं। आलम्बन के भी दो भेद हैं-

   आश्रय- जिस व्यक्ति के मन में भाव जाग्रत हों।

   विषय- जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति भाव उत्पन्न हों।
4. **अनुभाव-** आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं।

और भी समझिए-

हृदय में स्थित स्थायी भाव का जब अनुभाव, विभाव और संचारी भाव से संयोग होता है तब रस की निष्पत्ति होती है।

''राम को रूप निहारति जानकी,
कंगन के नग की परिछांही।
याते सबै सुधि भूलि गईं,
कर टेक रहीं पल टारत नाहीं''

उपर्युक्त उदाहरण में रस के चारों अंगों की निष्पत्ति इस प्रकार हुई है-

स्थायी भाव - रति

विभाव - क. आलंबन - जानकी (आश्रय) राम (विषय)

ख. उद्दीपन - कंगन के नग में (प्रिय का) प्रतिबिंब

अनुभाव- कर टेकना, पलक न गिरना।

संचारी भाव - हर्ष, जड़ता, उन्माद।

6. **'केशवदास' की संकलित वंदनाओं में कौन सा रस है?**

7. **निम्नलिखित पंक्तियों में निहित रस तथा उसके विभिन्न अंगों को समझाइए -**
बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ,
ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तपबृद्ध,
कहि-कहि हारे सब कहि न काहू लई।

योग्यता विस्तार

1. भक्तिकाल के प्रमुख संत कवियों की एक फोटो-एलबम तैयार कीजिए।
2. मीरा तथा केशव की कर्मभूमि की यात्रा कीजिए। अपने गुरूजनों से इन स्थानों का महत्व जानिए।
3. अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली बोलियों के भक्ति-गीतों का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ

मीरा के पद

बाल्हा = स्वामी *म्हारे* = मेरे, *साहिब* = आराध्य (कृष्ण), *निरजण* = निरंजन
रसना = जिह्वा *कीगरी* = तंतुवाद्य

वंदना

मृणाल = कमल की नाल *कराल* = भयानक, विकराल *पंक* = कीचड़ *पेलि* = हठपूर्वक
वपुष = देह *सनमुख* = सामने *दशमुख* = रावण *गजमुख* = गणेश
तपबृद्ध = श्रेष्ठ तपस्वी *अनुदिन* = प्रतिदिन *अणिमाहि* = अणिमा को (सूक्ष्मता)
गरिमाहि = गरिमा को *महिमाहि* = महिमा को

❋ ❋ ❋